ॐ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि०-पत्र
द्वितीय - भाग - 2. गद्य खण्ड

Date ______ Page ______

शीर्षक - 'बातचीत'
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न:.. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है? इसके द्वारा वह कैसे सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है?

उत्तर:- सुविख्यात निबंधकार बालकृष्ण भट्ट के अनुसार सबसे उत्तम प्रकार की बातचीत अपने में वह व्यक्ति पैदा करना है जिससे व्यक्ति 'स्व' से बात कर सके। हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक भारी आईना है, जिसमें इच्छानुसार प्रतिबिंब देख लेना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

निबन्धकार के अनुसार मनुष्य अपने हृदयरूपी चमनिस्तान में सैर का मनोयोग या चित्त को एकाग्रचीत करने की साधना से प्राप्त सिद्धि के बल पर सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है। मनुष्य अवाक् रह 'स्व' से बातचीत को साध्य कर साधनों का मूल, शक्ति का परम पूज्य मंदिर, परमार्थ के सोपान को प्राप्त कर सकता है।

मौन साधना के बल पर मनुष्य बड़े-बड़े अजेय शत्रुओं को बिना प्रयास जीतकर अपने वश में कर सकता है। इस प्रकार निबंधकार का स्पष्ट मत है कि मौन साधना कर स्व में विलीन होकर मनुष्य अपने लिए नवीन सपनों का संसार बना सकता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरक्सेना, पूर्णियाँ
17/04/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
'पथिक' – खण्डकाव्य, कवि – रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :– "रहा कौन नर सदा जगत में" अन्तर्निहित भाव को स्पष्ट करें।

उत्तर :– प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से 'पथिक' की हत्या के उपरांत की स्थितियों का कवि वर्णन करते हुए कहता है कि मानव जीवन नश्वर है। यहाँ कुछ भी शाश्वत नहीं है। राजा, रंक, मानी, अभिमानी सबों को एक दिन मृत्यु प्राप्त करनी ही है। यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो सब दिन रहने के लिए आया हो।

यहाँ न तो कोई सत्यवादी ही बचा न अभिमानी राजा ही बचा है। बड़े-बड़े विद्वान, मूर्ख धूर्त और सज्जन सभी अन्ततः चले गये। उन लोगों की एक ही वस्तु यहाँ रह गई और वह है- उनकी अच्छी-बुरी चर्चाएँ। वे कहाँ गए, किस गुफा में अदृश्य हो गये यह कोई कह नहीं सकता। उन लोगों ने कभी कोई संदेश हमें नहीं भेजा। वह देश कैसा है जिसे न कोई जान सका, न समझ सका। मृत्यु सबसे बड़ी चीज है, क्योंकि इसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है।

पथिक भी अपने शरीर को त्यागकर न जाने किस अज्ञात देश का वासी हो गया, कौन कह सकता है। जिस दिन से वह गया, सम्पूर्ण देश में उदासी छाई हुई है। लोग अपनी पीड़ा समझते हैं, किन्तु व्यक्त नहीं कर सकते। यह उनकी मजबूरी है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
स० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
17/04/20

शास्त्री, प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, आ० द्वि०- पत्र
जयद्रथ-वध, खण्ड काव्य
कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

Date: ______ Page: ______

अवलोक सम्मुख पार्थ ने गुरु को प्रणाम किया अहा,
आशीष दे आचार्य ने उनसे प्लुत-स्वर में कहा-
"देकर परीक्षा आज अर्जुन! तुष्ट तुम मुझको करो,
आओ दिखाओ हस्त कौशल यह समर सागर तरो।"

भावार्थ :—

अर्जुन का रथ जिस समय कौरवों के सेना के समीप पहुँचा तो वहाँ पर उनका सामना गुरुद्रोणाचार्य से हो गया और उनमें वार्तालाप प्रारम्भ हो गया।

कवि कहता है कि अर्जुन ने गुरुद्रोणाचार्य को अपने सामने देखकर उनको प्रणाम किया। तब गुरुद्रोणाचार्य ने रुद्ध कंठ से आशीर्वाद दिया। उसके बाद द्रोणाचार्य कहने लगे हे अर्जुन आज तुम मुझको परीक्षा देकर संतुष्ट करो। आओ आज तुम अपने हाथ की कुशलता को दिखाओ और इस युद्ध रूपी सागर को पार करो।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने गुरु द्रोणाचार्य के अपने शिष्य अर्जुन के प्रति प्रेम भाव को जागृत किया है। प्रेम के कारण ही गुरु द्रोणाचार्य का कंठ रुद्ध हो जाता है।

निःसंदेह गुरु-शिष्य का सम्बन्ध ही ऐसा होता है कि मिलने के बाद दोनों अपने को रोक नहीं पाते हैं। भाव पूर्ण सम्बन्ध में ऐसा प्रायः दिखाई पड़ता है। जहाँ तक अर्जुन की बात है तो वह गुरुद्रोणाचार्य का सबसे प्रिय शिष्य था। यही कारण है कि आमना-सामना होने पर वह अपनी भावना को विराम देने में असहज हो रहे हैं। कवि ने गुरु-शिष्य सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण करने में पूर्ण सफलता दिखलाई है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

17/08/20